Deg-2
Hist (Hons) P-III

(1)

गुलाम वंश का प्रशासन
एवं
राज्य की प्रकृति

मोहम्मद गौरी ने भारत के एक बड़े भू-भाग पर अधिकार कर लिया था और उसके बाद उसके उत्तराधिकारियों ने भी अनेक क्षेत्रों को अपने अधिकार में ले लिया था। परन्तु अनेक राज्य बीच-बीच में ऐसे थे जिन्हें गुलाम वंश के शासकों ने जीत तो लिया था, परन्तु पूरी तरह अपने राज्य में नहीं मिला सके इन राज्यों पर स्थानीय शासकों का प्रशासन कायम रहा और गुलाम वंश का शासन इन पर नहीं रहा फिर भी गुलाम वंश के प्रशासन का प्रभाव इन पर पड़ा।

राज्य की प्रकृति

इस्लामिक राज्यों की भाँति ही भारत का तुर्की शासन भी राजतंत्र पर आधारित था। यहाँ का शासन तंत्र शरियत और हदीस के सिद्धान्तों पर आधारित था। राज्य का अपना धर्म अर्थात इस्लाम धर्म था और राज्य के सभी साधनों को इस्लाम के प्रचार के लिए प्रयुक्त किया जाता था लेकिन राज्य की परिस्थितियाँ एकदम अलग थी यहाँ की अधिकांश जनता हिन्दू थी इसलिए समय-समय पर आवश्यकता पड़ने पर इसमें परिवर्तन होते रहे।

इस्लामिक सिद्धान्त के अनुसार —

P.T.O.

मुस्लिम राज्य का वास्तविक शासक खुदा
होता है और सुल्तान उसका मात्र प्रतिनिधि।
इस प्रतिनिधि का चुनाव मिल्लत अर्थात सभी
पुरुष मुसलमानों द्वारा किया जाता है, लेकिन
यह प्रथा भारत में बिल्कुल न चल सकी और
सुल्तान तलवार के बल पर बनने लगे। दिल्ली
सल्तनत की प्रकृति सैनिक शासन की हो गई।
समस्त राज्य पर सेना का शासन चलता था।
महत्वपूर्ण स्थानों पर किले बनाए गए। ताकि
सीमाओं की सुरक्षा की जा सके। सरकार का कार्य
मात्र कर एकत्रित करना और कानून व्यवस्था
बनाए रखना था। राज्य हिन्दू और मुसलमानों
के बीच भेदभाव की नीति अपनाता था। हिन्दुओं
को जिम्मी कहा जाता था। राज्य चाहता था
कि हिन्दू या तो मुसलमान धर्म स्वीकार करे या
फिर मृत्यु को गले लगाएँ या फिर निचले स्तर
(Degraded life) का जीवन व्यतीत करे और
जजिया कर दे। लेकिन डॉ० हुसैन ने यह सिद्ध
करने का प्रयास किया है कि हिन्दू लोग गुलाम वंश
के शासन काल में काफी सुखी और समृद्ध थे और उन्हें
किसी भी प्रकार हतोत्साहित नहीं किया जाता था
और उन्हें हर सम्भव सहायता प्रदान की जाती थी।
लेकिन उनका यह प्रयास अन्य इतिहासकारों को
सन्तुष्ट न कर सका और उनका यह प्रयास
असफल रहा और इतिहासकारों की धारणा पूर्व
की भाँति ही बनी रही।